वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 19 अंक 5 कुल पृष्ठ-8 21 से 27 दिसम्बर, 2023 दयानन्दाब्द 198 सृष्टि सम्वत् 1960853124 सम्वत् 2080 मा. शु.-09

एस.एस.डी.ए.वी. सीनियर सेकेण्ड्री स्कूल अवांखा रोड, दीनानगर एवं किड्स केयर इण्टर नेशनल स्कूल, अवांखा, दीनानगर पंजाब का वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह उत्साह, उमंग एवं हर्षोल्लास के साथ हुआ सम्पन्न

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नेता स्वामी आर्यवेश जी ने की अध्यक्षता

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के महामंत्री स्वामी आदित्यवेश जी रहे विशिष्ट अतिथि

इन्द्र कुमार गुजराल टेक्निकल विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. सुशील मित्तल रहे मुख्य अतिथि

विद्यालय समिति के प्रधान श्री अरविन्द मेहता ने किया सभी अतिथियों का स्वागत

दीनानगर के अवांखा रोड स्थित एस.एस.डी.ए.वी. सीनियर सेकेण्ड्री स्कूल का त्रिदिवसीय वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह दिनांक 15, 16 एवं 17 दिसम्बर, 2023 तक सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी नेता स्वामी आर्यवेश जी ने की।

15 दिसम्बर, 2023 को एस.एस.डी.ए.वी. सीनियर सेकेण्ड्री स्कूल का समारोह आयोजित किया गया तथा 16 दिसम्बर, 2023 को किड्स केयर इंटर नेशनल स्कूल का वार्षिक समारोह मनाया गया। इन दोनों कार्यक्रमों में स्कूल के बच्चों ने अपने कार्यक्रम प्रस्तुत किये तथा इन दोनों कार्यक्रमों में प्रतिभावान् बच्चों को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। किड्स केयर की प्रधानाचार्या श्रीमती प्रोमिला मनहास के कुशल संयोजन एवं नेतृत्व में

विद्यालय के बच्चों की प्रस्तुति अत्यन्त प्रेरणादायक, प्रभावशाली एवं श्रोताओं को मन्त्रमुग्ध कर देने वाली थी। इन प्रस्तुतियों में नशाखोरी, कन्या भ्रूण हत्या, प्रदूषण, भ्रष्टाचार आदि कुरीतियों पर ध्यान आकर्षित किया गया तथा इन बुराईयों से बचने की प्रेरणा दी गई। किड्स केयर इण्टर नेशनल तथा एस.एस.डी.ए.वी. सीनियर सेकेण्ड्री स्कूल के पूरे स्टॉफ एवं कार्यकर्ताओं को तीनों दिन के सफल आयोजन के लिए कार्यक्रम के अध्यक्ष स्वामी आर्यवेश जी, मुख्य अतिथि डॉ. सुशील मित्तल, श्रीमती ममता खुराना सेठी जिला शिक्षा अधिकारी, श्रीमती राजविन्दर कौर, श्रीमती हर्ष प्रभा धर्मपत्नी श्री शमशेर सिंह, हल्का इंचार्ज आप पार्टी, दीनानगर, प्रिं. जसकरण सिंह, स्वामी आदित्यवेश एवं श्री अरविन्द मेहता ने शुभकामनाएं तथा बधाई देकर उत्साहित किया। इस तीन दिवसीय कार्यक्रम में प्रिं. प्रोमिला मनहास एवं प्रिं. सशील कुमार ने अपने-अपने विद्यालयों की विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए कार्यक्रम के अध्यक्ष स्वामी आर्यवेश जी तथा

शेष पृष्ठ 6 पर

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

जीवन को यज्ञमय बनाओ

— स्वामी श्रद्धानन्द

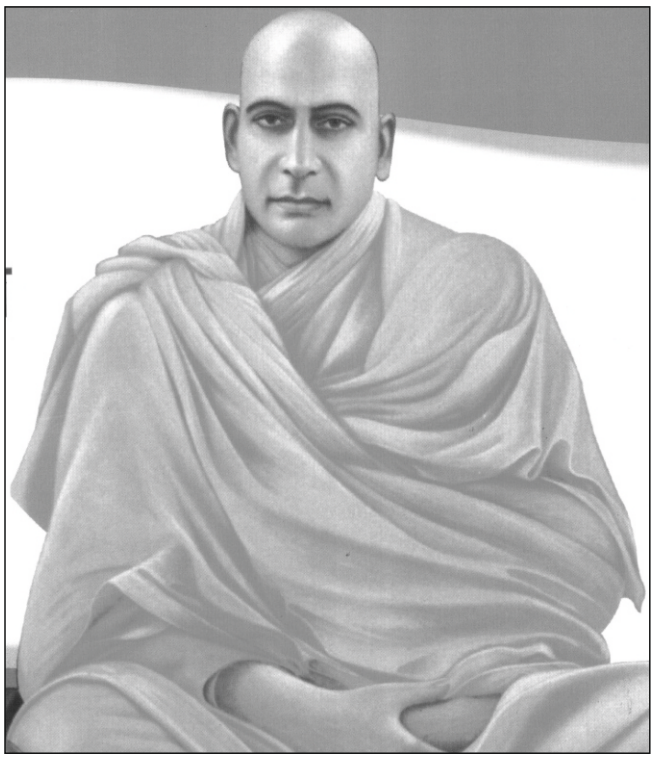

मनुष्य के प्राकृतिक भाग को भूख लगती है, उसकी निवृत्ति के लिये तरह–तरह के अच्छे से अच्छे फल और अन्न परमात्मा की ओर से दिये गए हैं। प्यास भी प्रकृति का एक भाग है उसकी निवृत्ति के लिए चारों ओर शीतल जल बह रहे हैं। क्या मनुष्य को कहने की आवश्यकता है कि भूख और प्यास के बुझने में नागा मत करो? और जब कभी आलस्य या प्रमाद से इन दैनिक कर्त्तव्यों को पूरा करने में मनुष्य ढील करता है तब शरीर और अच्छे से अच्छा स्वास्थ्य रखने वाला मनुष्य भी इन दैनिक कर्त्तव्यों के पूरा करने में अनियमता करके उसके दण्ड से नहीं बच सकता। यही अवस्था मन और आत्मा की है। दैनिक अग्निहोत्र की आज्ञा जहाँ अपवित्र वायु को स्वच्छ करने के लिये है, वहाँ उसकी जड़ में यह विचार भी काम करता है कि मनुष्य वायु को जिस प्रकार अस्वच्छ करते हैं उसी प्रकार प्रयत्न से उस वायु की अपवित्रता को दूर करना भी उचित है। किन्तु साथ ही इसके, यह दैनिक कर्त्तव्य उन रोजाना पापों की निवृत्ति के लिये भी है जो कि न जानने की अवस्था में प्रत्येक मनुष्य से प्रतिदिन हो जाते हैं। इस कर्म से बुद्धि निर्मल होकर मन की अवस्था पवित्र हो जाती है।

वैदिक आदर्श के अनुसार सबसे बढ़कर मनुष्य का दैनिक कर्त्तव्य ब्रह्म यज्ञ है। दूसरे महायज्ञ केवल इसके सहायक हैं। मुख्य दैनिक कर्त्तव्य यही है कि जिस तरह मनुष्य के भौतिक शरीर की भूख लगती है इसी प्रकार आत्मिक शरीर को आत्मिक भूख लगती है। अगर उस दैनिक भूख को प्रतिदिन निवृत्त न किया जाये तो मनुष्य की आत्मिक अवस्था भी वैसे ही गिर जाती है जैसे कि भूख लगने पर भौतिक शरीर की अवस्था होती है। इस ब्रह्म यज्ञ अर्थात् वेद रूपी ज्ञान की खुराक से आत्मा की तृप्ति नित्य करनी चाहिए। प्रत्येक काम में अनध्याय सभव है किन्तु क्या शरीर के दूसरे दैनिक कर्त्तव्यों में भी कभी नागा हो सकता है? रोग की अवस्था ने सम्भव है कि बनावटी जीवन व्यतीत करने वाले हम मनुष्यों को खुराक बदलने की आवश्यकता हो परन्तु कोई भी योग्य वैद्य खुराक को बन्द नहीं कर सकता। योग्य वैद्य वही समझा जाता है जो कि रोगी के शारीरिक बल को स्थिर रखने के यत्न से किसी न किसी तरह उसमें खुराक पहुँचाता रहे। इसी तरह से आत्मिक रोग लग जाने पर ब्रह्म यज्ञ के कर्त्तव्य से मनुष्य किसी तरह मुक्त नहीं हो सकता। इसलिये प्रत्येक आस्तिक पुरुष का कर्त्तव्य है कि नित्य प्रति प्रातः और सायं परमात्मा की उपासना के लिये ब्रह्म के ज्ञान की आहुतियों से आत्मिक यज्ञ किया करे। जब शारीरिक रोग होने पर शरीर को खुराक पहुँचाने से कोई भी मनुष्य नहीं रुकता तो आत्मिक रोग की अवस्था में आत्मिक खुराक से दूर भागना क्या आश्चर्य जनक नहीं है? किन्तु यह अवस्था इसलिये होती है कि हम सब अपनी वास्तविक अवस्था को त्यागकर बनावटी जीवन बिता रहे हैं। एक बच्चा जब बीमार होता है तो इधर उधर भागने के स्थान पर माता की गोद की ओर हाथ पसारता है और जब माता उसे गोद में ले लेती है तो वह विश्वास के साथ अपने रोग को भूल जाता है। जगत् माता से बढ़कर हमारे साथ किस सांसारिक माता का प्रेम हो सकता है? जगत् माता की गोद हमारे लिए हर समय खुली है। फिर शोक हम शारीरिक रोग का बहाना करके उस प्रेम भरी गोद में जाने से संकोच करते हैं और अपने लिए हजारों तरह के क्लेश मोल ले लेते हैं। जब शरीर रोग ग्रस्त होता है तो योग्य वैद्य खुराक बन्द नहीं करता बल्कि बोझल भोजन को बन्द करके हलकी खुराक रोगी के लिए निश्चित करता है। किन्तु हम लोग कैसे मूर्ख हैं कि उस समय जब कि हल्की से हल्की खुराक की आवश्यकता होती है, भोजन को बिल्कुल जवाब दे बैठते हैं। जो रोगी नित्यप्रति शारीरिक आवश्यकताओं को पूरा करने के योग्य है उसका यह बहाना कि बीमारी के कारण से परमात्मा की उपासना नहीं कर सकता, कैसा व्यर्थ है। मैंने हरि भक्तों के अन्तिम क्षण देखे और उनके विश्वास को देख कर अजब असर पैदा हुआ। ब्रह्मज्ञानी ऋषि कहते हैं कि **न शक्यते वर्णयितु तदा गिरा स्वय तदन्तः करणेन गृह्यते''**। उसको जिह्वा से वर्णन नहीं कर सकते। वह केवल अन्तःकरण से ग्रहण करने के योग्य है तब उस आनन्द के लिये निर्बल से निर्बल शारीरिक अवस्था बाधक नहीं हो सकती। क्या हम नित्यप्रति नहीं देखते कि बरसों का कमाया हुआ शरीर दो दिन उचित खुराक न मिलने से गिर जाता है। तब क्या सन्देह है कि बरसों की आत्मिक कमाई एक दिन की असावधानी से नष्ट हो सकती है। यही कारण है कि दोनों समय आत्मिक सत्संग के लिए आज्ञा की गई है और उसमें अनध्याय को कदाचित् स्थान नहीं दिया गया है। जो मनुष्य परमात्मा की नित्यप्रति उपासना से (ज्यादा काम या रोग के बहाने पर) बचने का यत्न करते हैं वे अपने लिए विशेषतः बीमारी को सामग्री मोल लेते हैं।

प्रिय पाठकगण ! संसार चक्र दिन–रात चल रहा है, इसके अन्दर ठहरने की गुंजाइश नहीं है। हर पल हमें नीचे या ऊपर ले जाने के लिए तैयार खड़ा है। अगर हम ऊपर की ओर न चलेंगे तो निश्चय से नीचे गिरना होगा। नीचे चलने के लिए किसी परिश्रम की आवश्यकता नहीं होती। नीचे ले जाने के लिये हमारे चारों ओर सामग्री दिखाई देती है। परन्तु ऊपर चलने के लिए विशेष पुरुषार्थ की आवश्यकता है। पर्वत के नीचे जाने के लिए सिवाय एक बार पैर नीचे की ओर डाल लेने के क्या किसी और गति की आवश्यकता होती है? परन्तु पहाड़ पर चढ़ने के लिए बड़ी भारी हिम्मत की आवश्यकता है। हाँ, जब किसी हद तक ऊपर चढ़ जावें और अभ्यास हो जावे तो फिर आप से आप पैर ऊपर की ओर उठता है। ज्यों ज्यों अभ्यास से बल और उत्साह बढ़ते जाते हैं त्यों त्यों ऊपर के सुन्दर दृश्य मनुष्य को अपनी ओर खींचते हैं। परन्तु क्या ऊपर चलते हुए, मनुष्य एक घण्टे के लिए भी रुक सकता है? एक बार ऊपर की ओर पग उठाओ, जब तक पहाड़ की चोटी पर न पहुँचे तब तक निश्चित नहीं बैठ सकते। इसी तरह आत्मिक पर्वत की यात्रा में भी बीच में रुकने का अर्थ मृत्यु है। जिस प्रकार पर्वत के मार्ग में रुकते ही और नीचे नज़र करते ही चक्कर आता है और घबराया हुआ मनुष्य हजारों फुट नीचे गिर कर चकना चूर हो जाता है इसी प्रकार आत्मिक उन्नति के शिखर पर चलते हुये जिज्ञासु की अवस्था होती है। प्यारे मित्रो ! इस विकट तथापि आवश्यक मार्ग पर चलते हुए ठहरने के विचार को भुला दो, जिससे कि बिना रोक टोक शिखर पर पहुँच कर तुम, अमर जीवन को पा सको।

शब्दार्थ – (नैत्यकै) दैनिक कर्त्तव्य की पूर्ति में (अनध्याः) छुट्टी, मुआफी (नास्तिक) नहीं है (हि) क्योंकि (तत्) उसे (ब्रह्मसत्रम) ब्रह्मयज्ञ (स्मृतम्) कहा है। (अनध्यायवषट्कृतम्) अनध्याय में भी स्वाहा किया हुआ और (ब्रह्माहुतिहुतम्) वेद मन्त्रों से उच्चारित आहुतियों से आहुत यह ब्रह्मयज्ञ (पुण्यम्) पुण्यप्रद होता है।

प्रख्यात शिक्षाविद् एवं वैदिक विद्वान् डॉ. राम प्रकाश जी का आकस्मिक निधन

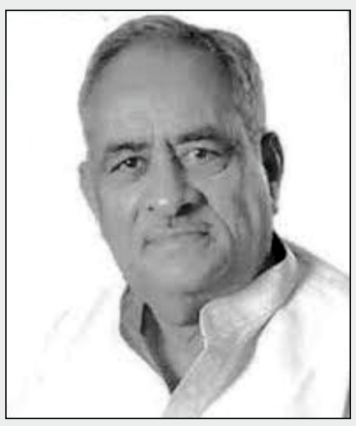

आर्य जगत के प्रख्यात शिक्षाविद एवं वैदिक विद्वान् डॉ. राम प्रकाश जी का दिनांक 13 दिसम्बर, 2023 को आकस्मिक निधन हो गया। डॉ. राम प्रकाश जी एक लब्ध प्रतिष्ठ वैदिक विद्वान् थे उन्होंने शैक्षणिक, सामाजिक एवं राजनैतिक तीनों क्षेत्रों में अपनी ख्याति अर्जित की थी। शिक्षा के क्षेत्र में वह पंजाब विश्वविद्यालय में रसायन शास्त्र के प्रोफेसर रहे तथा कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के प्रो. वाईस चांसलर रहे। इसके अतिरिक्त वे एक सुयोग्य लेखक थे उन्होंने अनेक पुस्तकों का लेखन कार्य करके उन्हें प्रकाशित कराकर निःशुल्क वितरण कराते थे। वे राजनीति में विधायक तथा बाद में राज्यसभा सांसद भी बनें। वे वैदिक सिद्धान्तों एवं आर्य समाज के प्रचार-प्रसार के लिए सदैव तत्पर रहते थे। उन्होंने स्वामी इन्द्रवेश एवं स्वामी अग्निवेश जी के साथ लम्बे समय तक मिलकर समाजसेवा का कार्य किया। वैदिक संस्कार उन्हें बचपन से ही अपने परिवार से विरासत में प्राप्त हुए थे, क्योंकि उनका पूरा परिवार पहले से ही महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों एवं आर्य समाज की विचारधारा से ओत-प्रोत था। ऐसे वैदिक विद्वान् का अचानक निधन आर्य समाज एवं उनके परिवार तथा राष्ट्र की अपूर्णीय क्षति है। परन्तु परमात्मा की व्यवस्था को न चाहते हुए भी स्वीकार करना पड़ता है। हम डॉक्टर साहब के निधन पर सार्वदेशिक सभा की ओर विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि उनकी आत्मा को शांति एवं सद्गति प्रदान करें तथा पारिवारिक जनों एवं सगे-सम्बन्धियों को इस दुःख को सहन करने की शक्ति दें।

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस का संदेश

स्व० रघुवीरसिंह शास्त्री, पूर्व मंत्री सार्वदेशिक सभा

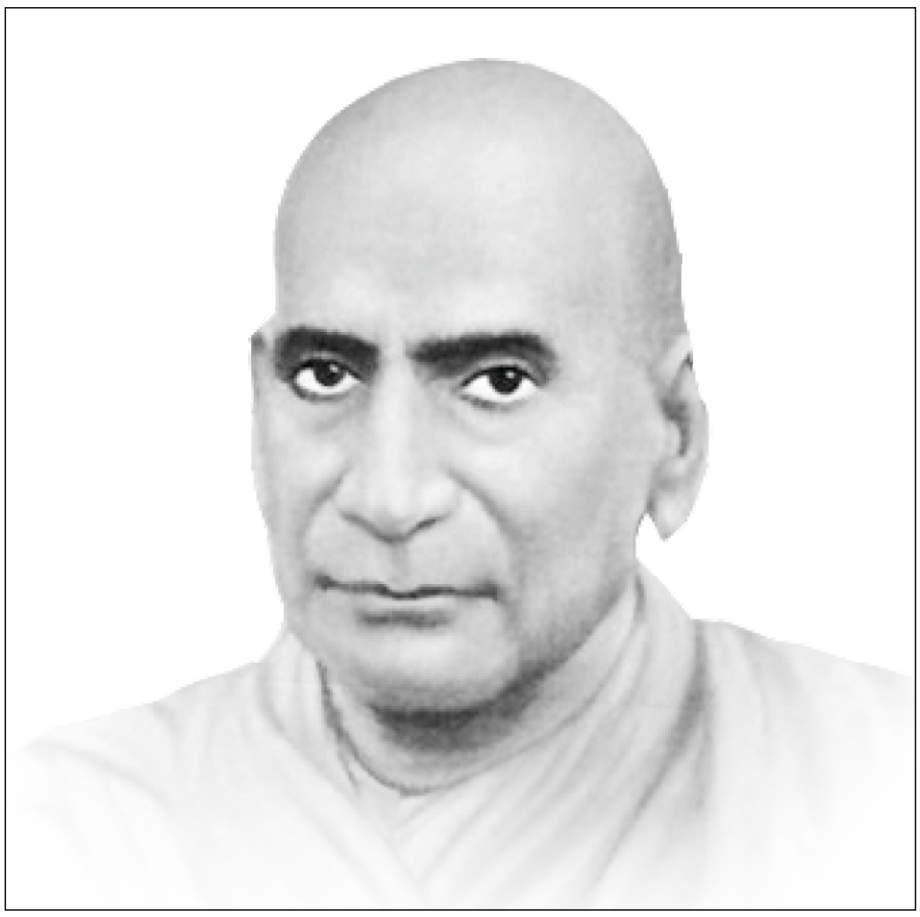

२३ दिसम्बर आर्यसमाज की गौरवपूर्ण विभूति श्रद्धेय स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज का बलिदान–दिवस है जो सारे आर्य जगत् में समारोह पूर्वक मनाया जाएगा। अपने आचार्य तथा प्रवर्तक के पश्चात् आर्यसमाज के संघटन एवं प्रसार की दृष्टि से स्वामी श्रद्धानन्द जी का यशस्वी नाम आर्यसमाज के इतिहास में प्रायः सर्वप्रथम स्थान रखता है। उनका विशाल व्यक्तित्व, दिव्य कार्यक्षमता, अनुकरणीय त्याग तथा साहसपूर्ण नेतृत्व सभी कुछ हमारे लिए ऐसा आदर्श रहा जिससे युगों तक हमें प्रेरणा तथा स्फूर्ति मिलती रहेगी। आचार्य दयानन्द विद्युत थी तो उनका शिष्य श्रद्धानन्द मानो एक विशाल यन्त्र था जो उससे संचालित हो रहा था। महर्षि के पश्चात् उनके मनोरथों को कार्यान्वित करने का उन्होंने बीड़ा उठाया। शिक्षा, समाजसुधार, देश की स्वाधीनता का आन्दोलन आदि सभी क्षेत्रों में उन्होंने मूर्त प्राप्ति का रूप धारण करके बहुत विपुल अभियान किये और सफलता ने उनके चरण चूमे। शिक्षा के क्षेत्र में गुरुकुल काँगड़ी जैसी संस्था उनकी क्रान्तिकारिणी क्षमता एवं प्रतिभा का सुदर प्रमाण है। इस प्रयास के द्वारा गंगा के तट पर ही बैठ कर उन्होंने युग गंगा के प्रवाह को बदलने का सफल प्रयोग किया। छूआछूत दूर करने के लिये सक्रिय पग उठाने के लिए जब महात्मा गान्धी जी तक अपेक्षित साहस न दिखा सके तो स्वामी जी ने बहुत व्यापक स्तर पर इस बुराई के उन्मूलन के लिए तीव्र आन्दोलन चलाया। पीछे चलकर यद्यपि महात्मा गान्धी ने भी इसी आन्दोलन को अपने कार्यक्रम का मुख्य अंग बनाया परन्तु आर्यसमाज के आन्दोलन से महात्मा जी के आन्दोलन में यह मौलिक अन्तर रहा कि आर्यसमाज का आन्दोलन मानवीय भावनाओं पर ही आधारित था जबकि काँग्रेस के आन्दोलन के पीछे राजनैतिक स्वार्थ निहित थे। इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि आर्यसमाज के आन्दोलन का स्तर ऊँचा रहा। आर्य समाज ने अछूतों को गले लगाया केवल धार्मिक श्रद्धा के वशीभूत होकर और काँग्रेस ने उन्हें अपनाया तो उन्हें राजनैतिक सत्ता प्राप्ति का साधन बनाया। आर्यसमाज ने अछूतों को तथाकथित सवर्णों के साथ आत्मसात् किया। अनेकों व्यक्ति इस वर्ग से आर्यसमाज के कार्यकर्ता तथा प्रचारक बने और अन्य उपदेशकों की भाँति ही पंडित आदि शब्दों के सम्मान का उपभोग करते रहे। दूसरी ओर महात्मा जी ने उन्हें हरिजन नाम देकर पृथक् जाति या वर्ग के रूप में बनाये रखा। इससे काँग्रेस को तो संस्था के रूप में राजनैतिक लाभ अवश्य मिला, परन्तु वर्गीय पार्थक्य के गर्त से बाहर निकल कर विशाल समाज में एकाकार होने की इस वर्ग की आकांक्षायें बहुत सीमा तक धूमिल हो गईं। मानो औषध ने एक रोग को तो शान्त किया, परन्तु दूसरा रोग उभाड़ दिया। स्वामी श्रद्धानन्द की सरणि यदि उसी समय पकड़ी होती तो समस्या का यह नया विकराल रूप न बना होता।

स्वामी श्रद्धानन्द जी ने शुद्धि आंदोलन को भी जन्म दिया। यह आन्दोलन न केवल धार्मिक था, अपितु इसके पीछे राष्ट्रीय एकता की दूरदर्शिता भी काम कर रही थी। स्पष्ट था कि मुस्लिम तथा ईसाई मतों के प्रचार के नाम पर देश में राष्ट्रियता विरोधी तत्त्व तथा भावनायें पनप रही थीं। अंग्रेज शासक इन्हें अपने साम्राज्यवादी प्रयोजनों की सिद्धि के लिए प्रोत्साहित कर रहे थे। दूसरी ओर भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन के नेता अपनी आरम्भिक दुर्बलताओं के कारण इन आंदोलनों के आगे झुकने में ही कल्याण समझते थे परन्तु स्वामी श्रद्धानन्द जैसा महारथी किसी लौकिक शक्ति का मुँह देखकर अपने आत्मा की पुकार को दबाने वाला न था। उन्होंने तथाकथित देशभक्त लोगों का रोष एवं क्षोभ मोल लेकर भी शुद्धि आन्दोलन को तीव्र किया। हजारों की संख्या में मुस्लिम व इसाई बने लोगों को पुनः वैदिक धर्म में दीक्षित कर वैदिक संस्कृति का संजीवनी–पान शुद्धि आन्दोलन के माध्यम से कराया। उनका मानना था कि धर्मांतरण से मुस्लिम व ईसाई साम्प्रदायिकता को बल मिलेगा और धर्मांतरित होने वाले लोग साम्प्रदायिक राजनीति से ग्रसित होकर राष्ट्र की मुख्यधारा से विलग होकर स्वाधीनता संघर्ष में व्यवधान उत्पन्न करेंगे। मुस्लिम साम्प्रदायिकता मुस्लिम लीग के माध्यम से जो मांगे राष्ट्रीय मंच पर रख रही थी और कांग्रेस के कुछ मुस्लिम नेता जिन्हें मौन रह कर समर्थन दे रहे थे वे मांगें आगे चल कर भारत–विभाजन का आधार बनीं। इस खतरे को स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने वक्त से पहले भांप लिया था। इसीलिए उन्होंने राष्ट्र के शरीर को क्षीण करने वाली इस मलिनता को धो डालने का संकल्प लिया था। उनका शुद्धि आन्दोलन राष्ट्रीय शरीर की शुद्धि का अभियान था। परन्तु दुर्भाग्य है हमारा और हमारे देश का कि स्वामी जी एवं आर्यसमाज के इस आन्दोलन का प्रवाह हिन्दुओं की संकीर्ण एवं राजनैतिक नेताओं की विवेकहीनता की बाधाओं ने अवरुद्ध कर दिया। काश ! राष्ट्र–मालिन्य के शोधन की यह विधि हमें हृदयंगम हो जाती तो देश को इस दुर्दशा का मुख न देखना पड़ता। जब स्वामी जी आगरा में शुद्धि कर रहे थे तो मुसलमान नेताओं के आग्रह पर काँग्रेस के शीर्षस्थ नेताओं ने स्वामी जी से मांग की कि शुद्धि आन्दोलन से दोनों सम्प्रदायों में द्वेष फैलता है, अतः आप इसे बन्द कर दें। स्वामी जी का उत्तर था–मैं अपने प्रचारक वापिस बुला सकता हूँ, यदि मुस्लिम नेता अपने प्रचारकों को वापिस बुला लें और यह वचन दें कि वे किसी हिन्दू को मुसलमान न बनायेंगे। परन्तु किस में साहस था कि मुस्लिम नेताओं से यह मांग मनवा सके। यही नेता हमारे शुद्धि आन्दोलन का हिन्दू–मुस्लिम सौहार्द के नाम पर सदा विरोध करते रहे। स्वामी जी अपने मार्ग से विचलित होने वाले न थे। इसी राष्ट्रीय आन्दोलन की वेदि पर उनका गौरवपूर्ण बलिदान हुआ।

इसी बलिदान के उपलक्ष्य में प्रतिवर्ष यह समारोह मनाया जाता है, जो हमें एक विशेष सन्देश तथा स्फूर्ति देता है। महर्षि के शिष्य स्वामी श्रद्धानन्द ने जिस निमित्त प्राण दिए, आर्यसमाज उस कार्य की पूर्ति को अपना प्रमुख कर्तव्य समझें।

आर्यनेता पं. प्रकाशवीर शास्त्री जी के 100वें जयन्ती समारोह के अवसर पर स्मृति व्याख्यान का भव्य आयोजन

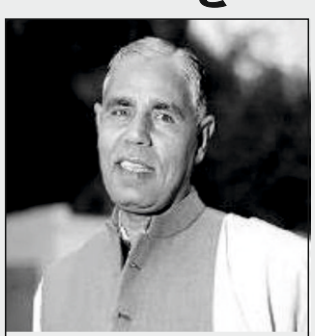

पं. प्रकाशवीर शास्त्री जी

आर्य समाज के प्रखर वक्ता एवं सांसद पं. प्रकाशवीर शास्त्री जी का जयन्ती समारोह 30 दिसम्बर, 2023 को नई दिल्ली के चिन्मय मिशन ऑडिटोरियम, लोधी एस्टेट, नई दिल्ली में मनाया जायेगा।

कार्यक्रम दोपहर 2:30 से 5 बजे तक चिन्मय मिशन ऑडिटोरियम, लोधी एस्टेट, नई दिल्ली में आयोजित हो रहा है। इसमें पधारकर कार्यक्रम को सफल बनायें। जिन आर्य महानुभावों के पास पं. प्रकाशवीर शास्त्री जी से सम्बन्धित संस्मरण एवं चित्र आदि हों वे इस ईमेल pvshastrimemorialtrust@gmail.com पर भेजने का कष्ट करें।

– शरद त्यागी, संस्थापक, प्रकाशवीर शास्त्री मेमोरियल ट्रस्ट,
मो.:–9896187096

सार्वदेशिक आर्य पुरोहित सभा, नई दिल्ली का प्रथम अधिवेशन बेहद हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न

11 दिसम्बर, 2023 को सार्वदेशिक आर्य पुरोहित सभा, नई दिल्ली का प्रथम अधिवेशन स्वामी प्रणवानन्द जी महाराज की अध्यक्षता में श्रीमद्दयानन्द गुरुकुल गौतम नगर, नई दिल्ली में सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम में विशेष रूप से राष्ट्र निर्माण पार्टी के संस्थापक डा. विक्रम सिंह जी मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे।

सार्वदेशिक आर्य पुरोहित सभा, नई दिल्ली के प्रथम अधिवेशन के अवसर पर स्वामी प्रणवानन्द जी महाराज के निर्देशन में कार्यक्रम का संचालन किया गया।

इस अवसर पर प्रथम अधिवेशन में सार्वदेशिक आर्य पुरोहित सभा, नई दिल्ली के प्रथम अध्यक्ष/मंत्री/कोषाध्यक्ष का निर्वाचन कराया गया। अध्यक्ष पद के लिए आचार्य प्रेमपाल शास्त्री के नाम का प्रस्ताव कोलकता के प्रतिनिधि श्री योगेश शास्त्री और दिल्ली से ऋषिपाल शास्त्री ने किया। जिसका समर्थन महाराष्ट्र, मुंबई से प्रतिनिधि आचार्य शिववीर शास्त्री और दिल्ली से प्रतिनिधि कुंवरपाल शास्त्री ने किया। सर्वसम्मति से आचार्य प्रेमपाल शास्त्री को अध्यक्ष सार्वदेशिक आर्य पुरोहित सभा, नई दिल्ली की घोषणा हुई। देश के अधिकांश सभी प्रतिनिधियों ने करताल ध्वनि से खड़े होकर स्वागत किया। तत्पश्चात् महामंत्री के पद के लिए पं. नरेन्द्र शास्त्री के नाम का प्रस्ताव दिल्ली के गवेन्द्र शास्त्री ने किया जिसका समर्थन विजेन्द्र शास्त्री (फरीदाबाद) ने किया। सर्वसम्मति से महामंत्री पद पर पं. नरेन्द्र शास्त्री के नाम की घोषणा की गई। तथा कोषाध्यक्ष पद के नाम पर अभय देव शास्त्री के नाम का प्रस्ताव यशपाल शास्त्री ने रखा, जिसका समर्थन रघुराज शास्त्री सहित कई प्रतिनिधियों ने किया। इस तरह से कोषाध्यक्ष के पद पर अभय देव शास्त्री की घोषणा हुई। कार्यक्रम निर्वाचन प्रक्रिया का संचालन आगरा (उ. प्र.) से हरिशंकर अग्निहोत्री ने कुशलता पूर्वक किया।

निर्वाचन प्रक्रिया के तदुपरांत डा. विक्रम सिंह जी ने पुरोहित वर्ग की स्थिति मजबूत बनाने के उपाय खोजने की जरूरत बताया। भविष्य में सार्वदेशिक आर्य पुरोहित सभा, नई दिल्ली को हर सम्भव सहयोग देने का आश्वासन दिया।

इस अवसर पर स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी ने आशीर्वाद देते हुए कहा कि सभी विद्वान् पुरोहित समाज में सामंजस्य बैठाकर अपने कार्य को करते रहें।

अन्त में सार्वदेशिक आर्य पुरोहित सभा, नई दिल्ली के नव निर्वाचित प्रधान आचार्य प्रेमपाल शास्त्री जी ने देशभर से आये सभी प्रान्तों के प्रतिनिधियों का हार्दिक धन्यवाद किया। साथ ही सार्वदेशिक आर्य पुरोहित सभा, नई दिल्ली को व्यापक रूप से मजबूत बनाने का संकल्प जताया। सभा के कार्यालय की जल्द ही व्यवस्था होगी। जहाँ देशभर के सभी पुरोहित वर्ग को जोड़ा जायेगा। सभी प्रान्तों में तत्काल संयोजक मनोनीत करके एक माह में पुरोहित सूची देने को कहा।

– अध्यक्ष, सार्वदेशिक आर्य पुरोहित सभा

महर्षि दयानन्द सरस्वती की 200वीं जन्म जयन्ती वर्ष एवं शहीदों की स्मृति में नशा मुक्त हरियाणा बनाने के लिए

17 दिसम्बर, 2023 को आयोजित आर्य महासम्मेलन भव्यता के साथ सम्पन्न

आर्य समाज सदैव सामाजिक बुराईयों के खिलाफ आवाज उठाता रहा है – कुमारी शैलजा

हरियाणा को पूर्ण नशामुक्त बनाने के लिए आर्य समाज कमर कसे – स्वामी नित्यानन्द

अमर बलिदानी, काकोरी काण्ड के शहीदों रामप्रसाद बिस्मिल, अश्फाक उल्ला खां, ठा. रोशन सिंह व राजेन्द्र नाथ लाहिड़ी की स्मृति में एक आर्य महासम्मेलन 'नशा मुक्त हरियाणा अभियान' को लेकर 17 दिसम्बर, 2023 को 10 बजे से 2 बजे तक सूर्या गार्डन गोहाना रोहतक रोड में किया गया। कार्यक्रम का संयोजन स्वामी नित्यानन्द सरस्वती जी ने किया तथा अध्यक्षता स्वामी वेदात्मवेश (महाराष्ट्र) ने की। स्वागताध्यक्ष श्री धर्मपाल आर्य कांसण्डी गोहाना व यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य राजेन्द्र जी गुरूकुल कालवा जीन्द रहे। इस कार्यक्रम की मुख्यअतिथि कुमारी शैलजा पूर्व मन्त्री भारत सरकार रही। ध्वज आरोहण डा० सुदेश छिक्कारा कुलपति भक्त फूल सिंह महिला विश्वविद्यालय खानपुर (सोनीपत) ने किया।

विशिष्ठ अतिथि डा० जगदीश चौधरी (शिक्षाविद्) बल्लभगढ़, राजू राणा (बजघेड़ा) गुरूग्राम, प्रदीप नैन (खरैंटी)जीन्द व चौ बालकृष्ण लोचब एडवोकेट गोहाना रहे।

इस अवसर पर बहन कुमारी सैलजा ने आर्य जनता को सम्बोधित करते हुए कहा कि शराब के नशे के साथ-साथ इण्टरनैट, गेमिंग और गैबलिंग के नशे ने भी नई पीढ़ी को बर्बाद कर दिया है। नशा अपना स्वरूप बदल चुका है। शराब के साथ-साथ जब ड्रग्स की भी लत लग जाये तो घर उजड़ जाते है। उन्होनें याद दिलाया कि कोरोना काल में सब कुछ बन्द था लेकिन शराब के ठेके खुले हुए थे सरकार कुछ पैसा कमाने के लिए शराब की आलीशान दुकान खोल रही है, लेकिन इससे कितने घर बर्बाद हो रहे हैं यह हमारी बहनें ही बता सकती हैं। उन्होंने कहा कि कोई भी बदलाव आसान नहीं होता, लेकिन आर्य समाज ने जो बीड़ा उठाया है, उसे करके दिखाया है। आर्य समाज हमेशा से ही समाज सुधारक के रूप में ऐतिहासिक कार्य करता रहा है, अब फिर आर्य समाज ने स्वामी नित्यानन्द के नेतृत्व में पहल की है जिसमें सभी को जुड़ना चाहिए।

इस अवसर पर हरियाणा में शराबबन्दी आन्दोलन के प्रमुख नेता स्वामी नित्यानन्द सरस्वती ने कहा कि शराबखोरी को सरकार का नैतिक (कानूनी) समर्थन प्राप्त है जिसके कारण ऐसी विकृत मानसिकता और सोच का जन्म हुआ है जिससे शराब के साथ-साथ तम्बाकू, चरस, भांग, धतूरा, अफीम, कोकीन, स्मैक, हीरोईन, ब्राउन शुगर, आदि नशीले पदार्थों का सेवन बिक्री और तस्करी अबाधगति से बढ़ती जा रही है। आज नशा-खोरी बड़प्पन का पर्याय बन गई है। इसके बिना कोई भी दावत अधूरी मानी जाने लगी है। यह अधोगति राष्ट्र की चूले हिला कर रख देगी, इसका निराकरण करना हम-आप सभी का कर्तव्य बन जाता है। स्वामी जी ने कहा कि नशाबन्दी का यह अभियान जन-जन तक ले जाने के लिए आर्य समाज के द्वारा गांव-गांव में जाकर सम्पर्क किया जा रहा है। फरवरी माह के प्रारम्भ में नशामुक्ति का अभियान पदयात्रा के रूप में जीन्द से प्रारम्भ किया जायेगा।

आर्य महासम्मेलन में हरियाणा के विभिन्न जिलों से बड़ी संख्या में आर्यजन सम्मिलित हुए।

– संयोजक स्वामी नित्यानन्द सरस्वती, नशा बन्दी परिषद्, हरियाणा

एकता के सूत्रधार स्वामी श्रद्धानन्द

डॉ. धर्मपाल आर्य, पूर्वकुलपति, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

संसार में कभी-कभी ऐसे महापुरुष जन्म लेते हैं जो अपने, त्याग, तपस्या, परमार्थ एवं बलिदान से नये युग का और नये इतिहास का निर्माण करते हैं। उनके पदचिन्हों पर चलकर आनेवाली पीढ़ियाँअपने को धन्य मानती हैं। सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक क्षेत्रों में नई दिशा प्रदान करने वाले महापुरुषों की श्रृंखला लम्बी है और हमें ऐसे महापुरुषों को श्रद्धापूर्वक स्मरण करना चाहिए, ताकि हम उनके जीवन और कृतित्व से प्रेरणा ग्रहण कर सकें तथा सामाजिक कल्याण के कार्य करके अपने जीवन को अर्थवत्ता तथा सार्थकता प्रदान कर सकें। युग प्रवतर्क महर्षि दयानन्द सरस्वती ऐसे ही महामानव थे। वे एक ऐसे पारसमणि थे जिसके स्पर्श से अनेक पाप पंक में निमग्न मनुष्य स्वर्ण बन गये और उनका तेजोदीप्त निर्मल सुरभित जीवन दूसरों के काम में लग गया। ऐसे ही महापुरुषों ने सर्वमेध यज्ञ तक करने में संकोच नहीं किया। वे अपनत्व से ऊपर उठ गये थे। वे सबके लिए हो गये थे। और ऐसे ही एक महामानव थे स्वामी श्रद्धानन्द, जो मात्र एक बार स्वामी दयानन्द के ओजस्वी, तेजस्वी स्वरूप को देखकर, उसके अकाट्य तर्कों से प्रभावित होकर, उनकी ईश्वर और धर्म की व्याख्या सुनकर उनके हो गये। स्वामी श्रद्धानन्द का पूर्वनाम मुंशीराम था। अनेक दुर्व्यसनों से ग्रस्त मुंशीराम का जीवन स्वामी दयानन्द के उपदेशामृत का पान करके सुवर्णमय हो गया। उनका सारासंसार ही आलोकित हो गया। उनकी सभी दशों दिशाएँ सुवासित हो गयीं। वह जिस दिशा में भी गया, उनकी चरण-रेख वहीं पर अंकित हो गयी। उन्हीं कदमों पर आज भी अनेक चलने को लालायित हैं।

वकील मुंशीराम की मानसिक और बौद्धिक चेतना की जागृति उच्च शैल शिखर से आविर्भूत शुभ्र जलस्रोत के समान थी जो कल-कल करती चारों दिशाओं में फैल गई। चेतना के उस अजस्र स्रोत से मानव कल्याण की जलधारा फूट पड़ी। धीरे-धीरे वह पतली जलधारा शिवालिक की उच्च पर्वत श्रृंखलाओं से उतरकर हरिद्वार के विस्तीर्ण प्रान्तर में ठहर गई और उसने चारों ओर रम्य वातावरण की सृष्टि की। यहाँ पर न रूक कर यह उद्दाम प्रवाह धारा राष्ट्रीय क्षितिज पर उभर कर, सभी को एक दृष्टि से देखने तथा सभी का कल्याण करने के लिए अग्रसर हो उठी जिस दिन पवित्र सन्यासाश्रम में प्रवेश किया, उसी दिन सारे संसार को एक परिवार समझने, सारे संसार के धन को एक आँख से देखने और लोक लज्जा को छोड़कर लोक सेवा में दत्तचित होने का व्रत धारण कर लिया था।' मायापुरी की वह वाटिका धन्य है, जहाँ से यह सुव्रती जन-जन के उद्धार के लिए राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली की ओर बढ़ चला।

स्वामी श्रद्धानन्द के जीवन में अनेक मोड़ आए। वे पौराणिक जगत से निकल कर आर्य जगत के सिरमौर बने। यहाँ पर उन्होंने राष्ट्रीय विचारधारा को नई ऊर्जा तथा देश की रक्षा में तत्पर नागरिक देने के लिए अपनी प्रान्तीय गौरवमयी शिक्षा पद्धति पर गुरुकुल की स्थापना की। अब उनका क्षेत्र बढ़ गया और वे सामाजिक तथा राजनैतिक क्षितिज पर छाते गए। उनके जीवन में कहीं पर भी ठहराव न था। वे तो तीर की भाँति आगे बढ़ जाते थे। जब राजनैतिक जीवन की क्षुद्रताएँ सामने आई और उन्हें अपना अभीष्ट प्राप्त न होता दिखा तो हिन्दू महासभा, हिन्दू संगठन, आर्य संगठन, दलितोद्धार, अछूतोद्धार तथा धर्म परावर्तन की दिशा में आगे बढ़ चले।

उनके जीवन में विभिन्न सोपान और परिवर्तनों और उनके द्वारा प्रवर्तित एकता के सूत्रों को समझने के लिए उनके लेखों और ग्रंथों का अनुशीलन अनिवार्य है। स्वामी जी ने पत्रकारिता की महत्ता को अपने जीवन के प्रारम्भिक चरणों में ही पहचान लिया था। वे शब्द की शक्ति से परिचित थे। इसलिए उन्होंने 18 फरवरी, 1886 को जालंधर से 'सद्धर्म साप्ताहिक' प्रारम्भ किया। इस पत्र की रीति-नीति को देखकर लाला सांईदास ने कहा था - 'यह पत्र समाज में नया युग लाएगा। यद्यपि यह कहना कठिन है कि यह युग हितकर होगा या अहितकर।' ये शब्द ठीक वैसे ही थे, जैसे कि उन्होंने मुंशीराम (स्वामी श्रद्धानन्द) के आर्य समाज लाहौर में प्रविष्ट होने पर, पहले दिन भाषण के बाद कहे थे - 'आर्य समाज में यह नई स्पिरिट आई है, देखें, यह आर्य समाज को तारती है या डुबो देती है।' लाला सांईदास की विलक्षण परीक्षण शक्ति की उद्भावना को स्वामी श्रद्धानन्द ने सकारात्मक दिशा में प्रवृत्त होकर गौरव ही प्रदान किया। इस 'सद्धर्म प्रचारक' को पढ़कर एक सज्जन के आक्षेप करने पर कि - 'दयानन्द के इतने कट्टर शिष्य बनते हो, पर महर्षि ने तो अपना सारा साहित्य हिन्दी में लिखा है, आप सद्धर्म प्रचारक उर्दू में क्यों निकालते हैं? उन्होंने 'प्रचारक' को हिन्दी में निकालने का निश्चय कर लिया और मार्च 1907 में 'सद्धर्म प्रचारक' गुरुकुल कांगड़ी से हिन्दी में प्रकाशित होने लगा। 1911 में उन्होंने 'प्रचारक' को दैनिक कर दिया। इसे उन्होंने दिल्ली से प्रकाशित किया तथा इसमें राजनीति की गतिविधियों को प्रमुखता दी गई। उनके बड़े पुत्र हरिश्चन्द्र 'प्रचारक' के संपादक थे। 30 जनवरी, 1915 से यह पत्र पुनः हरिद्वार से प्रकाशित होने लगा। यह पत्र आर्य समाज की सार्वभौम नीतियों का नियामक था। महात्मा मुंशीराम (स्वामी श्रद्धानन्द) के भावों और विचारों का सम्पूर्ण प्रतिफलन उसमें होता था। 1904 में 'सत्यवादी' नाम साप्ताहिक पत्र का प्रकाशन किया गया। इसके प्रथम संपादक पं. पद्म सिंह शर्मा थे। स्वामी श्रद्धानन्द के संपादन में 1920 से अंग्रेजी साप्ताहिक 'दि लिबरेटर' निकाला। स्वामी जी से प्रेरणा लेकर इन्द्र जी ने 'अर्जुन' 'विजय' 'सत्यवादी' साप्ताहिक निकाले। स्वामी जी के दौहित्र भी सत्यकाम विद्यालंकार ने 'नवयुग' नामक एक दैनिक का संपादन किया। 1926 में स्वामी जी की हत्या हो जाने पर वीर सावरकर ने अपने छोटे भाई डॉ. नारायण सावरकर को रत्नगिरि बुलाया और उन्हें दो पत्र निकालने की प्रेरणा दी। इसमें एक पत्र 'श्रद्धानन्द' था। यह पत्र स्वामी श्रद्धानन्द जी की पावन स्मृति में प्रारम्भ किया गया था। इसके प्रथम अंक में उनका अपना लेख ''श्रद्धानन्द जी की हत्या'' भी प्रकाशित हुआ था।

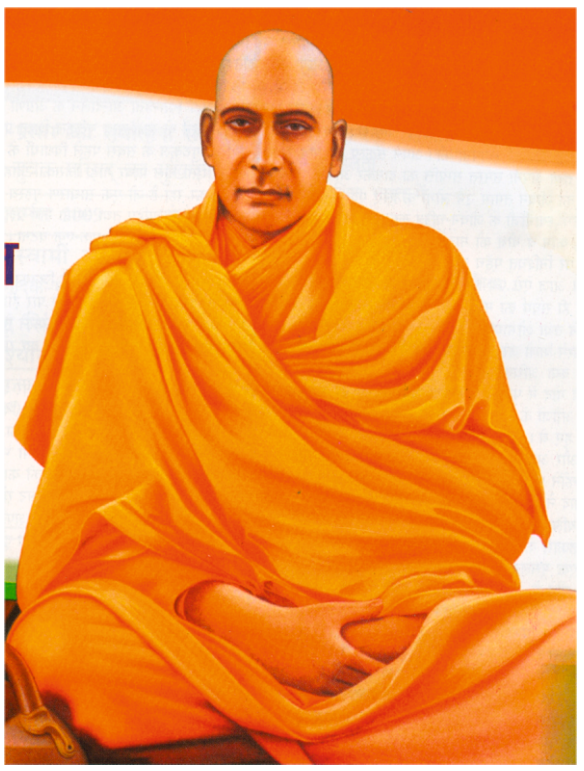

स्वामी श्रद्धानन्द हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने के पक्षधर थे। वास्तव में वे यह मानते थे कि एक ही भाषा होने से एकता का सूत्रपात किया जा सकता है। 6 दिसम्बर, 1913 को भागलपुर में हुए चतुर्थ हिन्दी साहित्य

सम्मेलन के अध्यक्ष पद पर भाषण करते हुए स्वामी जी ने उस समय कहा था - 'बिना एक राष्ट्रभाषा के प्रचार के राष्ट्र का संगठित होना ऐसा ही दुष्कर है जैसा बिना जल के मीन का जीवन। जिस समाज के सभासदों के पास एक दूसरे के हार्दिक भावों को समझने का कोई एक साधन नहीं, उनका संगठन दृढ़ कैसे हो सकता है।' भारत वर्ष के नेताओं ने यह तो मान लिया है कि एक राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र का निर्माण नहीं हो सकता, परन्तु इस विषय में अभी तक मतभेद है कि कौन सी भाषा राष्ट्रभाषा बन सकती है। मेरी सम्मति यह है कि आर्यभाषा ही राष्ट्रभाषा बन सकती है इस भाषा को हम केवल हिन्दुओं की ही भाषा नहीं प्रत्युत सारे देश की राष्ट्रभाषा बनाना चाहते हैं।'' स्वामी श्रद्धानन्द भाषायी एकता को राष्ट्रीय एकता का एक प्रमुख सूत्र मानते थे।

स्वामी श्रद्धानन्द जात-पांत के भेदभाव को दूर करना चाहते थे। उनके विचार से इससे, एकता के मार्ग में बाधा पड़ती है उनके गुरुकुल में मेहतरों के बच्चे भी सवर्णों के बच्चों के साथ-साथ रहते, पढ़ते, खेलते और खाते थे। 26 दिसम्बर, 1919 को अमृतसर कांग्रेस के अपने स्वागताध्यक्ष भाषण में उन्होंने अछूतोद्धार को कांग्रेस के कार्यक्रम का आवश्यक अंग बनाने का प्रस्ताव रखा था। 'इस पवित्र जातीय मन्दिर में बैठे हुए अपने हृदयों की मातृभूमि के पवित्र जल से शुद्ध करके प्रतिज्ञा करो कि साढ़े छः करोड़ हमारे लिए अछूत नहीं रहे बल्कि हमारे भाई बहन हैं। उनकी पुत्रियाँ और पुत्र हमारी पाठशालाओं में पढ़ेंगे, उनके नर-नारी हमारी सभाओं में शामिल होंगे और स्वतन्त्रता प्राप्ति के युद्ध में हमारेकंधे से कंधा जोड़ेंगे।

वे एकता स्थापना के सूत्रों के अन्तर्गत ही 'अछूतोद्धार' को मानते थे। उनका दिल उस समय रो उठा था, जब पं. मदन मोहन मालवीय की अध्यक्षता में आयोजित हिन्दु संगठन की सभा में एक अछूत को अपने विचार प्रकट करने से रोक दिया गया था। स्वामी श्रद्धानन्द ने 31 मार्च, 1919 की घटनाओं का विवरण इस प्रकार दिया था - '31 को पचास हजार मातमदारों के साथ मैं कब्रिस्तान की ओर चला, मुसलमान शहीद का जनाजा, हिन्दू बराबर कन्धा दे रहे थे। शहीद की कब्र पर उसके खून के पैबन्द से बरसों के बिछड़े हुए दिल एक दूसरे से जुड़ गये थे। फिर शाम को दो और जनाजे कब्रिस्तान की ओर चलते करके मैं तीन अर्थियों के साथ श्मशान भूमि में पहुँचा और दाहकर्म के पीछे परमेश्वर के दरबार में शान्ति के लिए प्रार्थना की और हिन्दू मुसलमानों को ईश्वर दत्त एकता को स्थिर रखने के लिए अपील की तो एक सिक्ख भाई ने कहा - 'हम पर क्यों जुल्म करते हो सिक्ख भी कौम के साथ है।' ''उन हजारों की भीड़ में उस समय सैकड़ों की आँखों से प्रेम की जलधारा बह रही थी और जब मैं श्मशान भूमि से चल दिया, तो प्रिंसिपल सुशील कुमार रूद्र मुझे आकर गले मिले और कहा - मातृभूमि के निरपराध पुत्रों पर अत्याचार नहीं देख सकता, मेरा हृदय जाति के साथ है और प्रत्येक सच्चा ईसाई आपके साथ है।''

स्वामी जी के इन शब्दों को सुनकर कौन होगा, जो उन्हें संकुचित दायरों में बांधने का प्रयत्न करे। वह सारे मानव समाज के थे, पूरा राष्ट्र उनका अपना था। उनकी शहादत सूर्य का वह प्रकाश है जो सब पर समान रूप से पड़ता है और जीवन का संचार करता है।

4 अप्रैल, 1919 की घटना हिन्दू मुसलिम एकता का एक विशिष्ट उदाहरण है। स्वामी जी महाराज ने दिल्ली की शाही जामा मस्जिद से वेदमंत्र 'त्वं हि नः पिता वसो, त्वं माता शतक्रतो' के साथ अपना संदेश आरम्भ किया था। इसके बाद उन्होंने फतेहपुरी मस्जिद में भी जनता को सम्बोधित किया था।

'हिन्दू मुसलमानों को और अधिक संगठित होकर देश की परतंत्रता की बेड़ियाँ काटनी है।' उनकी मान्यता थी कि हिन्दुओं और मुसलमानों की एकता के द्वारा ही राष्ट्रीय एकता और स्वाधीनता को प्राप्त किया जा सकता है। सन् 1922 में पंजाब में अजनाला के पास 'गुरु का बाग' को लेकर सिक्खों ने मोर्चा लगाया हुआ था। उसमें भाग लेने के लिए स्वामी जी अमृतसर पहुँचे और अकालतख्त से अपना सुप्रसिद्ध व्याख्यान दिया। इस व्याख्यान ने हिन्दू-सिक्ख एकता को सुदृढ़ आधार प्रदान किया। जिस समय अब्दुल रशीद अपनी मूर्खताभरी चेष्टा से इस्लाम के माथे पर कलंक का टीका लगा रहा था, उधर गोहाटी में अखिल भारतीय राष्ट्रीय महासभा के अधिवेशन की तैयारियाँ हो रही थी। स्वागताध्यक्ष महोदय ने स्वामी जी को उसमें आमंत्रित किया। वे स्वयं रूग्णावस्था के कारण उसमें सम्मिलित न हो सकते थे, परन्तु उस समय उन्होंने जो तार द्वारा संदेश भिजवाया, वह एकता का यज्ञ है -

ष्द भ्पदकन.डनेपसउ नदपजल कमचमदके निजनतम ूमसस इमपदह व ्पदकपंष

''अर्थात भारत का भावी सुख हिन्दू मुसलिम एकता पर आश्रित है।''

स्वामी जी महाराज एकता पर कितना बल देते थे, यह उनके इन कथनों से सर्वथा स्पष्ट है : 'मैं धमकियों से पूर्ण संदेश भेजने वालों को ऐसा पतित नहीं समझता जैसाकि वे स्वयं अपने आपको समझते हैं जो मुझसे सच्चा प्रेम करते हैं, उनसे मेरी प्रार्थना है कि वे मुसलमान भाईयों के प्रति सहिष्णुता दिखाएं और मुझे अपने माने हुए सिद्धान्तों की रक्षा में सहायता दें।

निस्संदेह राजनीतिज्ञों और योद्धाओं का किसी जाति के निर्माण करने में बड़ा हाथ होता है। परन्तु उनके नाम सहज में ही भूल जाते हैं, जबकि उन महात्माओं के नाम जो किसी जाति के नवीन जीवन को बनाते हैं, आगामी नस्लों की स्मृति में सदा बने रहते हैं। उन्हीं में स्वामी श्रद्धानन्द जी थे। उन्होंने हिन्दू मुस्लिम एकता के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया। इसके लिए उन्होंने अपने प्राणों की आहुति दे दी।

जो सोचते हैं कि वे किसी एक सम्प्रदाय के लिए सोचते थे, वे साम्प्रदायिक भावना से परिपूर्ण थे, वे गलती पर है, स्वामी जी महाराज तो इन क्षुद्र सीमाओं से ऊपर उठ चुके थे। वे कर्म, अकर्म और विकर्म का भेद जानते थे। उनके विचार उदार थे। वे भारत भू का अभिमान थे।

बहुमुखी प्रतिभा के धनी, सत्यनिष्ठ, कर्त्तव्यपराण, ईश्वर विश्वासी, स्वाभिमानी, निर्भीक, आदर्श आचार्य, छात्र वत्सल, दृढ़, सिद्धान्तवादी, सभी कार्यों में अग्रणी, सर्वस्व समर्पणकर्त्ता, एकता के सूत्रधार राष्ट्रनायक स्वामी श्रद्धानन्द को हमारी विनत श्रद्धांजलि।

- ए/एच-16, शालीमार बाग, दिल्ली-88

स्वामी श्रद्धानन्द का चिन्तन

- वेदाचार्य डॉ. रघुवीर वेदालंकार

स्वामी श्रद्धानन्द का चिन्तन बहु आयामी था तथा इसी के अनुरूप था उनका व्यक्तित्व। चिन्तन ही व्यक्ति के व्यक्तित्व को प्रभावित करता है, उसे दिशा देता है तथा गतिशील बनाता है। एक ऋषि की दूरदृष्टि, वीर की निर्भयता, जिज्ञासु मन तथा सत्य, भक्ति एवं सेवा से पूरित हृदय स्वामी जी को सहज ही प्राप्त थे। स्वामी जी के कार्यक्षेत्र की कोई एक ही दिशा नहीं थी, अपितु अपने चिन्तन तथा व्यक्तित्व के अनुसार जीवन में उन्होंने कई कार्यक्षेत्रों को चुना तथा एक ही समय में उन सबके दायित्वों का निर्वाह भी कुशलतापूर्वक किया। शिक्षा के क्षेत्र में उनका चिन्तन अद्वितीय था इसलिए उन्होंने छात्रों को विद्वान्, मनीषी तथा ब्रह्मचारी बनाने का सूत्रपात किया। यह प्रयोग उस काल में सर्वथा नया एवं एक दम चौकाने वाला था पुनरपि वह सफल हुआ। यह प्रयोग कहीं एकांगी न रह जाए, इसीलिए गुरुकुल प्रणाली में अंग्रेजी, विज्ञान आदि आधुनिक विषयों का प्रवेश भी किया गया। यही कारण था कि गुरुकुल कांगड़ी के उस समय के स्नातक वेद, संस्कृत, अंग्रेजी, विज्ञान, आयुर्वेद आदि सभी में प्रकाण्ड पण्डित बने तथा अध्यापन, लेखन, प्रचार, पत्रकारिता, राजनीति, देश सेवा आदि सभी क्षेत्रों में उन्होंने यश प्राप्त किया। गुरुकुल तो स्वामी जी के बाद भी खुले तथा आज भी चल रहे हैं तथापि उनका क्षेत्र बहुआयामी न होकर केवल संस्कृत अध्यापन तक ही सीमित है। विशेषकर हरियाण के गुरुकुलों की यही स्थिति है। यद्यपि आज गुरुकुल कांगड़ी में भी पर्याप्त परिवर्तन आ गया है तथा स्वामी जी के समय की विद्वता, मनीषा तथा कर्मठता नहीं रह गई है।

शिक्षा जगत में इतना गम्भीर परिवर्तन कर देने वाले श्रद्धानन्द केवल गुरुकुल तक ही सीमित न थे, अपितु वे इसके प्रति भी जागरूक थे कि ईसाई तथा मुसलमान यहां की जनता को अपने मतों में दीक्षित कर रहे हैं। इसी कारण ईसाई स्कूल से लौटकर आने वाली अपनी पुत्री वेदकुमारी के 'ईसा ईसा बोल तेरा क्या लागेगा मोल' वाक्य को सुनकर वे चौंक पड़े थे कि ईसाई तो अपने स्कूलों के माध्यम से भी ईसाइयत का प्रचार कर रहे हैं। इस समस्या का निवारण उन्होंने कन्या गुरुकुल का सूत्रपात करके किया। यह स्वामी जी की दूरदृष्टि ही थी अन्यथा अन्य लोगों के बच्चे भी ईसाई स्कूलों में पढ़ रहे थे, किन्तु किसी का ध्यान भी इस ओर नहीं गया था।

स्वमी जी मुसलमानों द्वारा हिन्दुओं के धर्मपरिवर्तन से भी चिन्तित थे तथा इसे राष्ट्रीय प्रश्न मानते थे। यही कारण था कि स्वामी जी ने शुद्धि आन्दोलन को इतना महत्व दिया कि गाँधी द्वारा इसका विरोध किये जाने पर स्वामी जी ने कांग्रेस की अध्यक्षता से ही त्यागपत्र दे दिया। आज हिन्दू मुस्लिम दंगे तथा विरोध होना सामाजिक एवं राजनीतिक रोग बन गया है। मुसलमान यहाँ के स्थायी निवासी हैं। उन्हें आप न तो भारत से खदेड़ सकते हैं तथा न ही बंगलादेश तथा पाकिस्तान की तरह उनका संहार करके उनकी संख्या कम कर सकते हैं, क्योंकि भारत धर्म निरपेक्ष देश है। अल्पसंख्यकों के नाम पर उन्हें नाना सुविधाएं देकर तथा कश्मीर जैसे राज्यों को विशेष दर्जा देकर, मुसलमानों को उनके धर्मानुसार विशेषाधिकार देकर भी आप इस समस्या का समाधान नहीं कर सकते क्योंकि उनकी मानसिकता ही दूसरे प्रकार की है। हिन्दू मुस्लिम द्वेष एवं झगड़ों को समूल नष्ट करने का एक ही प्रकार था तथा अब भी है- शुद्धि। शुद्धि से ही पूरा लाभ होगा। मुसलमानों को शुद्ध करने से उनकी संख्या घटेगी तथा हिन्दुओं की संख्या उतनी ही बढ़ेगी। आज भी इस आन्दोलन की आवश्यकता है। यद्यपि आर्य समाज इस दिशा में भी काम करता है किन्तु उतनी प्रमुखता तथा आंधी की तरह नहीं, जैसे कि स्वामी श्रद्धानन्द ने किया।

इन कार्यों के साथ-साथ स्वामी जी तात्कालिक राजनीति में भी प्रमुख भूमिका निभाते रहे। स्वामी जी राजनीति में किसी पद के लिए नहीं गये थे, अपितु इसके माध्यम से समाज सुधार के लिए गए थे। आज सर्वत्र व्याप्त भ्रष्टाचार की राजनीति किससे छिपी है? स्वामी जी ऐसी दल-दल के हामी नहीं थे। वे राजनीति में भी नैतिकता तथा धार्मिकता चाहते थे। इसलिए उन्होंने लिखा था कि आज ऐसे धार्मिक दल की आवश्यकता है जो दूसरों को धोखा देना भी वैसा ही पाप मानता हो जैसा कि अपने आपको देना। आर्य समाज ने राष्ट्रीय क्षेत्र में राजनीति को छोड़ दिया। यह न तो आर्य समाज के लिए शुभ रहा तथा न ही देश के लिए। राजनीति से दूर रहकर आप स्वामी दयानन्द का प्रतिपादित चक्रवर्ती साम्राज्य कैसे प्राप्त कर सकते हैं?

इतने महान कार्य करते हुए भी स्वामी श्रद्धानन्द ने कभी भी आर्य समाज के प्रचार की उपेक्षा नहीं की। चिरंजीलाल जी के साथ अपना ही मूढ़ा साथ लेकर चलना तथा उसे सड़कों पर रखकर उस पर खड़े होकर व्याख्यान देना स्वामी जी की ही शैली थी। श्रोता अपने आप मिल जाते थे। आज तो हमें आर्य समाजों में भी श्रोताओं को यत्न पूर्वक बुलाना पड़ता है, फिर भी मैदान साफ रहता है। आर्य समाज के प्रति समर्पण के कारण ही स्वामी जी आर्य समाज एवं सभाओं के अधिकारी भी रहे तथा एक संन्यासी के रूप में एक योग्य उपदेशक भी। स्वामी जी के उपदेश उनके हृदय से निकलते थे तथा उनके आचरण एवं कार्यों पर आधारित होते थे। इसीलिए उनमें व्यक्तियों के जीवन को परिवर्तन करने की शक्ति थी।

स्वामी श्रद्धानन्द सत्य के ग्रहण करने एवं असत्य के त्याग के परम उपासक थे। अज्ञान की अवस्था में उनका जीवन विपरीत दिशा की ओर भी बढ़ता रहा, किन्तु आँख खुलते ही उन्होंने अपने दोषों को उसी प्रकार दूर फेंक दिया जैसे कि कोई गले में पड़े विषधर सर्प को। स्वामी जी का सत्य के प्रति कितना आग्रह एवं आदर था कि संन्यास लेते समय पुत्रेषणा, वित्तेषणा, लोकेषणा मया परित्यक्ता बोलते समय अन्त में बोल उठे 'लोकेषण तु मया न परित्यक्ता' है कोई इतना स्पष्टवादी। प्रभु भक्ति एवं मृत्यु से अभय तो स्वामी जी को सम्भवतः अपने गुरु ऋषि दयानन्द से ही प्राप्त हुए थे। प्रभुभक्त निश्चित ही मृत्यु से अभय रहता है। इसी कारण महात्मा बुद्ध दुर्दान्त डाकू अंगुलीमाल के सामने निहत्थे चले जाते हैं। ऋषि दयानन्द अपने आपको तोप के मुख के आगे बांधने पर सत्य को छोड़ने को तैयार नहीं तो स्वामी श्रद्धानन्द भी गोरे सैनिकों की संगीनों के सामने शान्त भाव से छाती तान देते हैं। यही है मृत्यु को जीतना। ऐसे व्यक्ति मृत्युञ्जय कहलाते हैं।

स्वामी श्रद्धानन्द में जिज्ञासावृति प्रारम्भ से ही थी। इसीलिए उन्होंने अपना उपनाम भी जिज्ञासु रख लिया था। प्रत्येक महापुरुष के मन में जिज्ञासा वृत्ति होती है। इसके आधार पर ही वह आगे बढ़ता है। जिज्ञासु का मन विद्रोह करता है तथा सत्य को पाने को लालायित रहता है। महात्मा बुद्ध ने जहाँ मरण को जानने के लिए राज्य छोड़ दिया। मूलशंकर चूहें को शिव पिण्डी पर चढ़ा देखकर विद्रोह कर बैठे। स्वामी श्रद्धानन्द जिज्ञासु वृत्ति से छिप कर देखते हैं कि बहुत सवेरे स्वामी दयानन्द कहाँ जाते हैं तथा क्या करते हैं। उन्होंने यह पता लगा कर ही छोड़ा कि स्वामी जी जाकर समाधि में लीन हो जाते हैं। स्वामी श्रद्धानन्द हुतात्मा हैं। उन्होंने राष्ट्र एवं समाज के लिए अपने आपको होम कर दिया। उनके आदर्श, उनके कार्य अभी योग्य कार्यकर्ताओं की प्रतीक्षा में हैं। उनका आदर्श गुरुकुल चरमरा गया। उनका शुद्धि आन्दोलन शिथिल हो गया। उनका राजनीति के संशोधन का स्वप्न अधूरा ही रह गया। स्वामी जी का त्याग, तपस्या, सत्य, कार्यकुशलता सभी के लिए प्रेरणा के विषय हैं। आर्य समाज के लिए सर्वस्व त्यागी, महामना वीर संन्यासी को उनके बलिदान दिवस पर शत शत प्रणाम।

- उपाचार्य, रामजस कालेज, दिल्ली

पृष्ठ 1 का शेष

एस.एस.डी.ए.वी. सीनियर सेकेण्ड्री स्कूल अवांखा रोड, दीनानगर एवं किड्स केयर इण्टर नेशनल स्कूल, अवांखा, दीनानगर....

मुख्य अतिथि महोदय का परिचय दर्शकों के समक्ष प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम में उपस्थित छात्र–छात्राओं एवं अभिभावकों को सम्बोधित करते हुए स्वामी आर्यवेश जी ने चरित्र निर्माण पर बल दिया। उन्होंने कहा कि चरित्रवान लोग ही राष्ट्र को उन्नति के शिखर पर ले जा सकते हैं। आज चारित्रिक दृष्टि से समाज का पतन होता जा रहा है। इसलिए ऐसे विद्यालयों में बच्चों को चरित्र, ईमानदारी, देशभक्ति तथा सेवा के संस्कार दिये जाने चाहिए। स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि यह स्कूल दिन–रात शिक्षा के क्षेत्र में उन्नति के साथ–साथ न सिर्फ हर पहलू को छू रहा है बल्कि बच्चों को भारतीय संस्कृति से भी सराबोर कर रहा है। उन्होंने कहा कि इस विद्यालय के बच्चों को नैतिकता, देशभक्ति, अध्यात्म से ओत–प्रोत किया जाता है। उन्होंने कहा कि इस स्कूल में बच्चों की सुविधा व सुरक्षा का पूरा ध्यान रखा जाता है और अभिभावक बच्चों को स्कूल में भेजकर अपने आपको निश्चिन्त महसूस करते हैं। यहाँ की अध्यापिकाओं ने बच्चों के अन्दर परिश्रम का जज्बा कूट–कूट कर भरा है और इनका भविष्य अत्यन्त उज्जवल है।

स्वामी आदित्यवेश जी ने मनुर्भव की व्याख्या करते हुए मनुष्य बनने की प्रेरणा दी। उन्होंने कहा कि मनुष्य का शरीर प्राप्त कर लेने से कोई मनुष्य नहीं बन पाता, जब तक कि उसके जीवन में मनुष्यता के गुण न आ जायें। इसके लिए आवश्यक है कि प्रारम्भ से ही बच्चों को अच्छे संस्कार दिये जाने चाहिए।

डॉ. सुशील मित्तल ने भारतीय संस्कृति को पुनः स्थापित करने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कहा कि बच्चों को प्राचीन भारतीय संस्कृति से अवगत कराना चाहिए और उन्हें अच्छे संस्कार देने चाहिए।

श्रीमती ममता खुराना ने भी मुक्त कंठ से विद्यालय की प्रशंसा करते हुए कहा कि कार्यक्रम में बच्चों की प्रस्तुतियां अत्यन्त प्रभावित करने वाली हैं।

प्रिं. जसकरण सिंह ने बच्चों को प्रेरणा देते हुए कहा कि वे अपने अन्दर विद्यमान ऊर्जा को पहचानें और संकल्प लेकर जीवन को उन्नति की ओर ले जायें।

स्वामी वेद प्रकाश नूरपुर एवं श्री ओम प्रकाश आर्य महामंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब भी उपस्थित रहे।

स्कूल के प्रबन्धक समिति के अध्यक्ष श्री अरविन्द मेहता जी ने समस्त गणमान्य महानुभावों का स्मृति चिन्ह भेंटकर सम्मान किया। समारोह में श्री तरसेम लाल आर्य एवं श्री यशपाल आर्य आर्य समाज बरनाला, श्रीमती सुलोचना आर्या, श्रीमती राकेश आर्या, श्री अशोक आर्य एवं श्री अरूण अमृतसर, श्रीमती सुमेधा मेहता एवं श्रीमती सुमति आर्या, डॉ. कमलेश शर्मा पूर्व प्रधानाचार्या, श्री राजन मेहता एवं श्रीमती भूमि मेहता आदि की गरिमामयी उपस्थित थे। कार्यक्रम उत्साहपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ।

स्वामी श्रद्धानन्द का जामा मस्जिद में प्रवेश

— डॉ. भवानीलाल भारतीय

30 मार्च, 1919 को दिल्ली में घटी घटनाओं का विस्तारपूर्वक उल्लेख स्वाधीनता संग्राम के इतिहासकारों ने किया है। स्वामी जी ने उस दिन प्रातः स्थिति का अध्ययन किया और दोपहर को वे अपने निवास पर आये ही थे कि उन्हें रेलवे स्टेशन पर गोली चलने की खबर मिली। वे तुरन्त घटनास्थल पर पहुँचे। उस समय भारी संख्या में जनता उनका अनुसरण कर रही थी। उपस्थिति बढ़ते-बढ़ते पच्चीस हजार तक पहुंच गई। स्वामी जी उस समय स्टेशन के सामने वाले कम्पनी बाग में जनता को सम्बोधित कर रहे थे। अचानक घण्टाघर की ओर से गोली चलने की आवाज आई पता लगा कि कुछ लोगों को चोटें आई हैं। आपने उत्तेजित जनता को किसी प्रकार शान्त किया और दिल्ली के मुख्य आयुक्त से कह दिया कि यदि लोगों को शासन की ओर से उत्तेजित नहीं किया गया तो शान्ति रक्षा की जिम्मेवारी वे स्वयं लेने के लिए तैयार हैं। इस प्रकार हजारों के हुजूम को साथ लेकर स्वामी जी स्टेशन से घण्टाघर की ओर लौटे। यहाँ उनके समक्ष गोरखा पलटन के कुछ जवान संगीन ताने खड़े हो गये और दर्प के साथ बोले- ''यदि आगे बढ़े तो छेद देंगे।'' गुस्ताख सैनिकों का उद्दण्डतापूर्ण कथन भला वीतराग संन्यासी को कब विचलित कर सकता था। स्वामी जी ने एक हाथ उठाकर जनता को शान्त किया और दूसरे से छाती की ओर संकेत करते हुए कहा - मैं खड़ा हूँ, गोली मारो। कुछ और सैनिक भी आ गये और बन्दूकों की संगीनें स्वामी जी के वक्षस्थल तक पहुँच गई। किन्तु उसी समय एक अंग्रेज अधिकारी के आ जाने और तुरन्त हस्तक्षेप करने से एक ऐसी घटना घटने से रह गई जिसकी कल्पना भी अत्यन्त भयावह है। घण्टाघर के चौक में संगीनों के आगे अपनी छाती खोलकर स्वामी श्रद्धानन्द ने मानो जता दिया कि मातृभूमि के लिए वे बड़ी से बड़ी कुर्बानी करने के लिए तैयार हैं।

30 मार्च को शहीद हुए मुसलमान नागरिकों के जनाजे का जब मातमी जुलूस निकला तो सारी दिल्ली की जनता उमड़ आई। हिन्दू मुस्लिम भ्रातृभाव का अनोखा दृश्य दिखाई पड़ा। इन दिनों भारत के इन दोनों प्रमुख धर्मावलम्बियों के बीच प्रेम और सौहार्द की जो गंगा प्रवाहित हुई, उसने साम्प्रदायिकता के कल्मष को बहा दिया। काश, दोनों जातियों का यह स्नेह सम्बन्ध कुछ अधिक स्थायी होता तो देश विभाजन की नौबत ही नहीं आती।

1919 की 31 मार्च का प्रातःकालीन सूर्य इस बात का साक्षी था कि मानों 30 मार्च की रात ने सदियों पुरानी हिन्दू-मुस्लिम भेदभाव की दीवारों को चकनाचूर कर दिया था। यह प्रातःकाल 'हम एक है' (ह से हिन्दू और म से मुस्लिम) से उदित हुआ। 31 मार्च को प्रातःकाल 30 मार्च की गोली से मृत एक मुसलमान का जनाजा निकला। जनाजे के साथ चलने वाली भीड़ बहुत अधिक थी। भीड़ में हिन्दू अधिक थे या मुसलमान यह कहना अनुमान का विषय था। जनाजे के साथ स्वामी श्रद्धानन्द भी थे और हकीम अजमल खाँ भी। इन दो महान विभूतियों का प्रथम मिलन जनाजे के जुलूस से ही हुआ।' अगले दिन सरकारी हस्पताल से पांच लाशें और मिली। उनमें से दो मुसलमान और तीन हिन्दू थे। मुसलमानों के जनाजे मुख्यतया हिन्दुओं के कन्धों पर थे और हिन्दूओं की अर्थियों को मुसलमान कन्धा दे रहे थे। इन शवों के उठाने वालों के मनों में यह भावना नहीं थी कि वे किसी काफिर को अथवा हिन्दू को कन्धा दे रहे हैं। पाचों अर्थियाँ कुछ दूर तक साथ-साथ चलीं। चांदनी चौक से भीड़ दो भागों में बंट गई। स्वामी जी मुसलमान शहीदों के जनाजे के साथ ईदगाह जाने की जिद्द कर रहे थे। किन्तु मुस्लिम नेताओं के आग्रह पर उनको अपना विचार बदलना पड़ा और वे हिन्दू शहीदों की अर्थियों के साथ यमुना घाट के लिए चल पड़े। इस स्थिति में स्वामी जी के पैर तो निगम बोध घाट की ओर बढ़ रहे थे, परन्तु मन विपरीत गति से मुसलमान शहीदों के जनाजों के साथ भाग रहा था।

जामा मस्जिद में भाषण

शहीदों का खून सदा रंग दिखाता है, यह उक्ति सत्य है। यह रंग इतना सात्विक होता है कि इसमें जाति, धर्म, वर्ण और वर्ग के

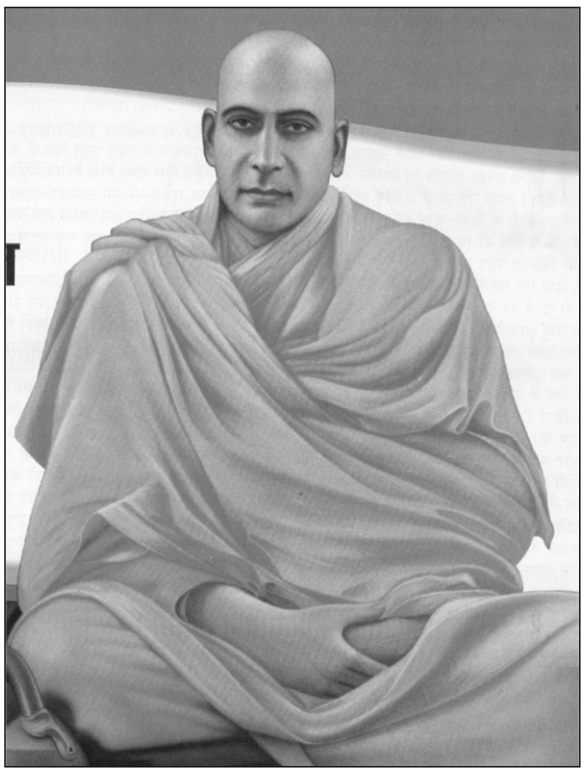

संकुचित विचार काफूर हो जाते हैं। दिल्ली के शहीदों के रंग ने 'हम एक हैं' के दिखाने में देरी नहीं की। 4 अप्रैल के दिन दोपहर बाद की नमाज के पीछे विश्व की प्रसिद्ध जामा मस्जिद में मुसलमानों का जलसा हो रहा था। भीड़ में से मौलाना अब्दुल्ला चूड़ी वाले ने अचानक आवाज देकर कहा - 'स्वामी श्रद्धानन्द की तकरीर भी होनी चाहिए। दो-तीन उत्साही युवक उठे और स्वामी जी को नये बाजार के निवास से लिवा लाए।

स्वामी जी लिखते हैं कि मैं अपने लेखन-कार्य में व्यस्त था। तभी दोपहर के एक बजे के लगभग 50 मुसलमान सज्जन मेरे निवास पर आये और मुझे प्रेमपूर्ण आग्रह से नीचे ले गए। वहां एक तांगा खड़ा था। मार्ग में उन्होंने कुछ अन्य वाहनों को भी लेने का प्रयत्न किया जो एक-दूसरे से अधिक तेज चल सकते थे। अन्ततः उन्हें एक खाली कार मिल गई। मुझे फुर्ती से उसी में बैठाया गया और मैं जामा मस्जिद की दक्षिण दिशा की सीढ़ियों पर पहुँचा। मैंने देखा कि कुछ लोग लौट रहे थे, किन्तु जब उन्होंने मुझे सीढ़ियों से चढ़ता हुआ देखा तो 'महात्मा गांधी की जय' तथा 'हिन्दू-मुसलमान एकता की जय' के नारे लगने लगे और वे सभी लोग पुनः मस्जिद में प्रवष्टि हो गए। अन्दर 30 हजार से कम उपस्थिति नहीं थी। मैं वहाँ बैठे हुए आखिरी आदमी के पीछे बैठने ही जा रहा था कि अन्य मुसलमान भाई दौड़ते हुए आये और मुझे इमारत के भीतरी भाग में ले गए। उसके बाद में बाहर लाया गया, जहाँ धर्म-प्रवक्ता के लिए एक लकड़ी का मंच रक्खा हुआ था। उस समय मौलवी अब्दुलमजीद उपस्थित लोगों को सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने मुझे उपदेश वेदी पर आने के लिए कहा। मुझे संकोच हुआ। हजारों लोगों की आवाजों ने मुझे ऊपर चढ़ने के लिए कहा। दो सीढ़ियां चढ़कर मुझे पुनः संकोच हुआ। भारी भीड़ पांवों पर खड़ी थी और उसने एक स्वर से मुझे मंच पर जाने के लिए कहा। जब मैं व्याख्यान वेदी पर पहुंच गया, तो सभी लोग बैठ गए।

मैं सोचता था कि मौलवी अब्दुलमजीद अपना प्रवचन जारी रखेंगे, किन्तु उन्होंने यह कहते हुए अपना कथन समाप्त कर दिया - 'आप लोगों ने सुन लिया कि शहीदों के रक्त के बारे में कुरान मजीद क्या कहता है। स्वामी श्रद्धानन्द अब आपको बतायेंगे कि हिन्दू भाइयों के मतानुसार जो वेद में ईश्वरीय वाक्य कहे जाते हैं, वे भी यही बात कहते हैं।'' यह एक अप्रत्याशित आमंत्रण था। मुझे खड़ा होना पड़ा। मैंने वेद के उस मंत्र का उच्चारण किया, जिसमें ईश्वर को पिता और माता कहकर सम्बोधित किया गया था -

त्वं हि नः पिता वसो त्वं माता शतक्रतो बभूविथ। अधाते सुम्नमीमहे।

मैंने उपस्थित अपार जनता को कहा कि वह शहीदों के बेकसूर होने की साक्षी दे तथा उनसे अनुरोध किया कि वे उस परमात्मा के चरणों में नत होवें जो सबका पिता और सबकी माता है। मैंने एक उर्दू कवि का निम्न उद्धरण भी पढ़ा -

हिन्दू सनम में जलवा पाया तेरा।
आतिश पै फिगां ने रस गाया तेरा।।
देहरी ने किया देहर से ताबीर मुझे।
इन्कार किसी से बन न आया तेरा।।

जो लोग वहाँ उपस्थित थे, वे ही उस दृश्य का ठीक-ठीक बयान कर सकते हैं। और जब मैंने तीन बार 'ओ३म् शान्ति आमीन' कहा तो सारी सभा ने एक स्वर से सारे स्थान को गुंजाते हुए उसे पुनः उच्चरित किया। यह एक प्रेरणादायक दृश्य था। मैं वेदी से नीचे उतरा और लोगों के साथ वहां से चला आया। उन लोगों के चेहरे ही बता रहे थे कि वे कितने प्रभावित हुए हैं।

इसके बाद तो सारे देश की मस्जिदों में मुस्लिम धर्म-वेदी से हिन्दू साधुओं के व्याख्यान देने तथा हिन्दू मन्दिरों में दोनों धर्मों के लोगों की मिली-जुली उपस्थिति में मुसलमान धर्मयाजकों द्वारा प्रवचन करने का सिलसिला ही चल पड़ा। उस महनीय दृश्य के बाद जो कुछ घटा है, उसके बावजूद मैं उस घटना की स्मृति से अब तक प्रभावित हूँ और इस आशा को धारण किये हूँ कि संदेह के बादल छटेंगे और विश्वास तथा सच्चाई का सूर्य अपने सम्पूर्ण प्रकाश के साथ पुनः प्रदीप्त होगा।

मस्जिद के भीतर तो यह सुन्दर दृश्य अभिनीत हो रहा था और इस विशाल मस्जिद के बाहर हथियारबन्द गाड़ियों में सेना और पुलिस लोगों को भड़काने के लिए हाजिर थीं। किन्तु अपने नेताओं से प्रेरणा प्राप्त करने वाले लोगों ने अपनी मनःस्थिति को वश में ही रक्खा।

आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश+तेलंगाना के कर्मठ कार्यकर्ता श्रीनिवास कमितकर आर्य जी का आकस्मिक निधन

आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश+तेलंगाना के कर्मठ कार्यकर्ता श्री निवास आर्य जी का दिनांक 18 दिसम्बर, 2023 को लगभग 78 वर्ष की आयु में आकस्मिक निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। श्री निवास आर्य जी ने आर्य समाज संगठन में लगभग 35 से 40 वर्ष तक कार्य करते हुए अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। श्री निवास आर्य जी आर्य प्रतिनिधि आन्ध्र प्रदेश के एक मुख्य स्तम्भ के रूप में कार्य करते रहे, जब कभी सभा के प्रधान (प्रो. विट्ठलराव आर्य) जी प्रान्त से बाहर रहते थे तो उनके पीछे सभा कार्यालय के दायित्वों को पूर्ण जिम्मेदारी के साथ निभाते रहे। वे अपने पीछे चार सुपुत्र तथा एक सुपुत्री सभी विवाहित भरा पूरा परिवार छोड़कर गये हैं। श्री निवास आर्य जी के पूज्य पिता जी भी स्वतंत्रता सेनानी थे, हैदराबाद के निजाम आन्दोलन में उन्होंने अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। पिता के संस्कारों के अनुरूप ही श्रीनिवास आर्य जी ने समाज सेवा के कार्यों में अपना पूरा जीवन लगा दिया। ऐसे कर्मठ कार्यकर्ता का अचानक चले जाना जहां आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश की अपूर्णीय क्षति हुई है वहीं आर्य समाज ने अपना एक कर्मठ कार्यकर्ता खो दिया है। इस दुःख की घड़ी में पूरा आर्य जगत उनके परिवार के साथ खड़ा है। सार्वदेशिक सभा की ओर से स्वामी आर्यवेश जी तथा प्रो. विट्ठलराव आर्य जी ने उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हुए उनकी आत्मा को शांति एवं सद्गति प्रदान करें तथा शोक संतप्त परिवारजनों को इस असह्य कष्ट को सहन करने की शक्ति दें।

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य समाज के त्यागी, तपस्वी एवं तेजस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें :-
www.facebook.com/SwamiAryavesh व
ई-मेल : aryavesh@gmail.com
दूरभाष : 011-42415359, 23274771)

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

पूज्य स्वामी ओमानन्द सरस्वती जी द्वारा स्थापित आर्ष कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, नरेला, दिल्ली का वार्षिक महोत्सव धूमधाम के साथ मनाया गया

सार्वदेशिक सभा के नेता स्वामी आर्यवेश जी, दिल्ली के पूर्व विधानसभा अध्यक्ष डॉ. योगानन्द शास्त्री जी एवं तेजस्वी युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी समारोह में हुए सम्मिलित

गुरुकुल की छात्राओं ने अद्भुत कार्यक्रम किये प्रस्तुत

आर्य जगत् के महान् संन्यासी पूज्य स्वामी ओमानन्द सरस्वती जी द्वारा स्थापित आर्ष कन्या गुरुकुल महाविद्यालय नरेला, दिल्ली का वार्षिक महोत्सव दिनांक 10 दिसम्बर, 2023 को हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। समारोह में स्वामी आर्यवेश जी महाराज के अतिरिक्त डॉ. योगानन्द शास्त्री पूर्व अध्यक्ष दिल्ली विधानसभा, स्वामी आदित्यवेश जी महामंत्री सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्, स्वामी चरणदास जी महाराज भिवानी, डॉ. आनन्द कुमार जी पूर्व आई.पी.एस. , श्री रामपाल शास्त्री कार्यकारी प्रधान मानव सेवा प्रतिष्ठान आदि ने कार्यक्रम में सम्मिलित होकर अपने विचार प्रस्तुत किये। कार्यक्रम में मंच का संचालन श्री रामपाल आर्य एवं श्री कुलदीप शास्त्री ने कुशलता के साथ किया। गुरुकुल के मंत्री श्री सोमवीर शास्त्री ने आगन्तुक अतिथियों का सम्मान एवं आतिथ्य बड़ी श्रद्धा के साथ किया।

इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी ने शिक्षा में संस्कार देने पर विशेष बल दिया। उन्होंने कहा कि बिना संस्कारों के वर्तमान शिक्षा प्रणाली अधूरी है।

डॉ. योगानन्द शास्त्री ने गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के महत्त्व पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि प्राचीनकाल में गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का बोलबाला था और गुरुकुल से स्नातक बनकर निकलने वाले युवक एवं युवतियां समाज के विभिन्न दायित्वों को निष्ठा के साथ निभाते थे।

स्वामी आदित्यवेश जी ने स्वामी ओमानन्द जी महाराज के त्याग एवं संघर्ष से प्रेरणा लेने की बात कही और गुरुकुलों को साधन–सम्पन्न बनाने का आह्वान किया।

डॉ. आनन्द कुमार पूर्व आई.पी.एस. ने संस्कृत भाषा के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए बताया कि लॉर्ड मैकाले से पहले भारत में ज्ञान–विज्ञान चमोत्कर्ष पर था और उस समय संस्कृत भाषा में उपलब्ध ग्रन्थों से ही विज्ञान की रिसर्च होती थी। क्योंकि अंग्रेजी तब तक भारत में नहीं आई थी। इसलिए संस्कृत के महत्त्व को समझते हुए गुरुकुलों को शक्ति सम्पन्न बनाना अत्यन्त आवश्यक है।

श्री रामपाल शास्त्री ने गुरुकुल नरेला के गौरव को प्रकाशित करते हुए कहा कि इस गुरुकुल से डॉ. सुकामा जैसी विदुषियां निकली हैं, जिन्हें पद्मश्री जैसे नागरिक सम्मान से गत् दिनों भारत की राष्ट्रपति ने अलंकृत किया था। इसी प्रकार डॉ. सुमेधा जो वर्तमान समय में कन्या गुरुकुल चोटीपुरा की संचालक हैं। वे भी इसी गुरुकुल की स्नातिका हैं। इस तरह से इस गुरुकुल ने देश को अनेक विदुषियां प्रदान की हैं। वर्तमान समय में भी गुरुकुल निरन्तर उन्नति की ओर बढ़ रहा है।

कार्यक्रम में गुरुकुल की छात्राओं ने अद्भुत खेल एवं व्यायाम प्रदर्शित किये। रस्से का मलखम्भ तथा स्तूप के हैरतअंगेज कार्यक्रम देखकर उपस्थित जन–समूह अत्यन्त प्रभावित एवं आश्चर्यचकित था।

इस अवसर पर छात्राओं के अभिभावक एवं अन्य आर्यजन भी भारी संख्या में समारोह में सम्मिलित हुए। विशिष्ट अतिथियों को स्मृति चिन्ह देकर गुरुकुल की ओर से सम्मानित किया गया और छात्राओं को स्वामी आर्यवेश जी ने पारितोषिक वितरण कर उत्साहित किया। कार्यक्रम सफलता के साथ सम्पन्न हुआ।

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (दूरभाष : 011-23274771)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।